कक्षा **-9** दिनांक**-16/07/21**

उत्तरी मैदान**-**

1- उत्तरी मैदान को मोटे तौर पर 3 वर्गों में विभाजित किया गया है| उत्तरी मैदान के पश्चिमी भाग को पंजाब का मैदान कहा जाता है |सिंधु तथा इसकी सहायक नदियों के द्वारा बनाए गए इस मैदान का बहुत बड़ा भाग पाकिस्तान में स्थित है| सिंधु की सहायक नदियां झेलम, चिनाब, रावी, व्यास तथा सतलज हिमालय से निकलती हैं|

2- गंगा के मैदान का विस्तार घग्घर तथा तीस्ता नदियों के बीच है | यह उत्तरी भारत के राज्यों हरियाणा ,दिल्ली ,उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड के कुछ भाग तथा पश्चिम बंगाल में फैला है| ब्रह्मपुत्र का मैदान इसके पश्चिम विशेषकर असम में स्थित है|

3- आकृतिक भिन्नता के आधार पर उत्तरी मैदानों को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है| नदियां पर्वतों से नीचे उतरते समय शिवालिक की ढाल के पर 8 से 16 किलोमीटर के चौड़ी पट्टी में गुटिका का निक्षेपण करती हैं| इसे "भाबर" के नाम से जाना जाता है|

4- भाबर पट्टी के दक्षिण में यह नदियां पुनः निकल आती हैं एवं नम तथा दलदली क्षेत्र का निर्माण करती हैं, जिसे तराई कहा जाता है| या प्राणियों से भरा घने जंगलों का क्षेत्र था| बंटवारे के बाद पाकिस्तान से आए शरणार्थियों को कृषि योग्य भूमि उपलब्ध कराने के लिए इस जंगल को काटा गया |

5- उत्तरी मैदान का सबसे विशालतम भाग पुरानी जलोढ़ का बना है| वह नदियों के बाढ़ वाले मैदान के ऊपर स्थित है तथा वेदिका जैसी आकृति प्रदर्शित करते हैं |इस भाग को भांगर के नाम से जाना जाता है| इस क्षेत्र की मृदा में चूनेदार निक्षेप पाए जाते हैं, जिसे स्थानीय भाषा में कंकड़ कहा जाता है|

6- बाढ़ वाले मैदानों के नए तथा युवा निक्षेप को खादर कहा जाता है| इनका लगभग प्रत्येक वर्ष पुनर्निर्माण होता है, इसलिए यह उपजाऊ होते हैं तथा गहन खेती के लिए आदर्श होते हैं|